13

चित्रा मुद्गल और नारी विमर्श

निर्देशक
डॉ. श्रीदेवी चौबे
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
बी.सी.एस. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जिला–धमतरी (छ.ग.)

शोधार्थी
थानेश्वर गिरी
पं रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर(छ.ग.)

भूमिका :–

वर्तमान समय में स्त्री की दशा,दिशा और इन पर होते अत्याचार इत्यादि को आंकने का चल रहा है जिसे साहित्य में एक विमर्श का दे दिया गया है इसी विमर्श को वर्तमान समय में स्त्री विमर्श,नारी विमर्श या महिला सशक्तिकरण के नाम से भी जाना जाता है। स्त्री विमर्श भी अन्य दूसरे विमर्श कि तरह ज्वलंत मुद्दा है। परंतु आधुनिक युग में नारी विमर्श के मायने बदलने लगा है क्योंकि वर्तमान समय की नारी वह नारी बिल्कुल भी नहीं जो प्राचीन कालिन नारियां हुआ करती थी। प्राचीन वर्ग की नारी पुरूष वर्ग के अधीन रहकर जीवन यापन कर लेती थी। बचपन में पिता, जवानी में पति,वश्ध्दावस्था में बेटे के साये में रहती थी। युग परिवर्तन हो रहा है आधुनिकता अपने चरम सीमा में है इसी का परिणाम है कि, वर्तमान समय की नारी पिता ,पति या बेटे पर आश्रित रहना नहीं चाहती अपितु वे स्वावलंबी बनना चाहती है। खुद पर लगाये गये तमाम बंधनों से मुक्ति चाहती है। इन्हें स्वतंत्रता चाहिए उन सभी अनिष्ठ रूढियों से जिसने इन्हें जकड रखा है। यद्यपि हिन्दी साहित्य जगत में कई ऐसे विचारक है जिन्होनें नारी मुक्ति को स्वर दिये है।

'अबला' और 'असहाय' का टैग लिए पितृसत्तात्मक समाज द्वारा जबरन लादी गई नीतियों और रूढियों को और ढोना नहीं चाहती, चाहती है तो केवल स्वतंत्रता। वह अबला नहीं सबला सुनना चाहती है। अबला, बेचारी असहाय जैसे शब्दों का पर्याय बनने से अच्छा वे खुद का वजूद बनाना चाहती है। चित्रा मुद्गल द्वारा रचित उपन्यास 'आंवा' की पात्र सुनंदा भी यही सोचती है सुहैल द्वारा धर्मांतरण करने के पश्चात शादी करने का प्रस्ताव ठुकरा देती है। और बीन ब्याहें ही वह सुहैल के बच्चे की माँ बनाना चाहती है और कहती है –''फिर मै आत्मनिर्भर हूँ दीदी। अपनी बच्ची की परवरिश स्वयं कर सकने में समर्थ। मेरा मातश्त्व ब्याह के टुच्चे प्रमाण पत्र की मोहताज नही''[1]जहाँ एक ओर समाज में कुंवारी माँ बनने पर किशोरी को ताना मारा जाता है वही दूसरी ओर सुनंदा जैसे माँ भी होती है जिन्हें समाज से आगे भ्रूण हत्या और अपना मातश्त्व दिखाई देता है। वो समाज की परवाह किए बिना ही अपने बच्चे को जन्म देती है।

चित्रा मुदगल और नारी विमर्श:–

हिन्दी कथा साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकार आकर्षक व्यक्तित्व की धनी चित्रा मुदगल जी का हिन्दी साहित्य जगत में आगमन युग परिवर्तन जैसा था। क्योंकि इनका सम्पूर्ण जीवन संघर्ष और चेतना का प्रतीक है जिसका प्रभाव इनके साहित्य में स्पष्ट रूप से नजर आता हैं। हिन्दी साहित्य वर्ग में अनेक साहित्यकार हुए जिन्होनें अपने साहित्य कशति के माध्यम से समाज को नई दिशा देने का प्रयास किया जिसमें एक नाम चित्रा मुद्गल जी का भी है जिन्होनें नारी विषय में अपनी लेखनी चलाकर नारी–मुक्ति को एक नया आयाम दी है। समाज द्वारा अनेक विषयों पर लगाए गए बंधनों को स्त्री को मुक्ति दिलाना ही चित्रा मुदगल जी का प्रमुख ध्येय है। ताकि नारी सामाजिक दोयमता की स्थिति से मुक्त होकर पुरूष के समकक्ष खडा हो सके। 'इस आधार पर यह कहना गलत न होगा कि चित्रा मुदगल के साहित्य का प्रमुख स्वर नारी मुक्ति है,'–"स्त्री को स्त्रीत्व से मुक्ति नहीं चाहिए, बल्कि उन रीतियों से मुक्ति चाहिए जिन्होनें उसे वस्तु बना रखा है।"[2]नारी केवल वासना की वस्तु नहीं है। और न ही केवल मनोरंजन का साधन। बल्कि नारी तो मानव जीवन की वह आवश्यक धुरी है जिसके बिना समाज रूपी गाडी आगे नहीं बढ सकती, न ही चराचर विश्व का संचालन हो सकेगा। नारी होने के कारण चित्रा जी का नारियों के प्रति संवेदनशील एवं जागरूक होना स्वाभाविक है।

नारी क्या है? वह क्या चाहती है ऐसे कई प्रश्न चित्रा जी ने अपने साहित्य मे उठाए है। उन्होनें उन व्यक्यिों का पुरजोर विरोध किया जिन्होनें नारी को केवल पुरूषों के पैर की धूल मात्र समझा है। पितश्सत्तात्मक समाज के पुरूषों की मानसिकता को स्पष्ट करते हुए लिखती है –''पति क्या होता है। अधिकारिक बलात्कारी। आर्थोराईज्ड मैनें अशोक को इस अधिकार वंचित कर रखा है कि जब मन किया, बीवी सो रही हो, या जाग रही हो, काम मे व्यस्त हो, मर्जी हो ,न हो उठाकर बिस्तर पर पटक लिया"[3]नारी में चेतना का विस्तार हुआ है वह स्वावलंबन की ओर अग्रसर हो रही है। चाहे पति हो या पिता, किसी ने भी उसके सम्मान को ठेंस पहुँचाना चाहा, जिंदगी पितश्सत्तात्मक समाज के शर्तो पर जीने को मजबूर करने की कोशिश किया तो उसका विरोध करने से पीछे नहीं हटती।

चित्रा मुद्गल के साहित्य में नारी चेतना का विशेष रूप से चित्रण किया गया है। इनकी कहानी,उपन्यास की पात्र खुद पर होते अत्याचार को चुपचाप सहकर या सुसककर नहीं रहती अपितु उसका कड़े स्वर में निंदा करती है 'एक जमीन अपनी' उपन्यास में अंकिता नामक पात्र को केन्द्र में रखकर मॉडलिंग कीदुनिया में स्त्री के यथार्थ के भीषण और संघर्षशील पक्ष का उजागर किया है। जहाँ पर उनका(स्त्री) कला के नाम का शोषण किया जाता है, अश्लील प्रदर्शन के लिए उन्हें बाध्य किया जाता है। जिससे तंग आकर विज्ञापन एजेंसी के निर्देशक और मालिक भोजराज को खरी– खोटी सुनाती है वह अश्लीलता का आश्रय लेकर उत्पाद को बेचने के विरूध्द है। अपनी को वह चकला नही बनाना चाहती और कहती है –''शैलेद्र जी मुझ पर यह दबाव नहीं डाल सकते कि 'दियरा' वाले मॉडल को झरने के बीच नंगा करना चाहे तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिएक्

कृ में अश्लीलता का आश्रय लेकर उत्पाद बेचने के विरूध्द हूँ''[५] नारी जागरूक हो रही है अपने अधिकार को लेकर अपने कर्तव्य लेकर। पहले के मुकाबले उनमें चेतना का विस्तार हुआ है। समाज के संकीर्ण मानसिकता वाले पुरूष आज भी स्त्री को उसके शरीर से उपर नहीं देखते इसका चित्रण चित्रा जी ने 'एक जमीन अपनी' उपन्यास में किया है इस उपन्यास के पात्र सुधीर के माध्यम से संकीर्ण मानसिकता वाले पुरूष के विचारों को प्रकट करती है। सुधीर का मानना है कि स्त्री का उसके शरीर के अलावा कुछ और नहीं होता '' तुम मामूली औरत. क्या है तुममें? सिवाय तराशी देह के? और मैं सिर्फ तराशे शरीर के साथ नहीं रह सकता पुरूष को इससे आगे भी कुछ चाहिए होता है। महज शरीर पाने के लिए उसे घर में औरत पालने की जरूरत नही होती''बदलते युग परिवेश में भी कुछ पुरूषों की मानसिकता, उनके विचार अब भी नहीं बदले वो आज भी औरत को बिस्तर की शान मात्र समझते है। उनका विचार है कि, औरत या उनकी पत्नी केवल 'शोभा' की वस्तु मात्र है। मुद्‌गल जी की रचनाओं में कई नारी पात्र है जो पढ़ी लिखी है, जो पुरूषवादी मानसिक कारागृह से मुक्ति के लिए बेचैन हो रही है।

भारत सारे संसार में अपनी संस्कशति की अनेक विशेषताएँ जैसे शिष्टाचार, सभ्य संवाद, तमीज़, तहज़ीब, धार्मिक संस्कार इत्यादी के नाम से जाना जाता है। विशेषताओं से भरे इस भारत देश की संस्कृति केवल पुरूषों के पक्षधर है, अनेक स्थानों पर नारी की अवहेलना उनका अपमान होता है। भारतीय संस्कशति में हिन्दू धर्म में पति को परमेश्वर का दर्जा दिया जाता है तो और स्त्री को 'शक्ति' का पर्याय माना गया है किंतु यह सोंच कहाँ तक सही क्या वास्तव तें नारी को समाज में शक्ति का स्थान दिया गया है? बिल्कुल नहीं। बल्कि पुरूष को परमेश्वर का दर्जा दिया गया है तो उसके साथ न्याय भी होता है किंतु महिलाओं को जो दर्जा दिया गया है उसका न्याय नही होता। उन्हें केवल दासी, रखैल ,पुरूषों के पैर की धूल मात्र समझी जाती है। उन पर पाबंदियाँ लगाई जाती है। धर्म के नाम पर, संस्कृति के नाम पर, इसी संस्कृति के नाम पर लगाए गए बंदिश के विषय में चित्रा मुद्‌गल कहती है–'' भारतीय संस्कृति में अनेक रूढ़ियां औरत को जकड़ने के लिए बनाई गई है। लेकिन उन रूढ़ियों से अलग हटकर जो हमारी भारतीय संस्कृति है वह वाकई अच्छी है। रूढ़ियों से दूर रहकर समानता का दृष्टिकोण सामने रखते हुए विषमता को दूर करने के लिए प्रयास किये जाने चाहिए।''[६]अनादी काल से ही नारी को भारतीय समाज में विशिष्ट स्थान प्राप्त है किन्तु जैसे– जैसे समय बितता गया उनके पैरों पर धर्म और संस्कृति के नाम पर बेडियाँ पड़ते गया।

संसार के प्रत्येक जीव अपने शरीर का स्वयं स्वामी होता है अर्थात उनके शरीर या देह पर किसी अन्य जीव को कोई अधिकार नहीं होता। किंतु दुनिया की आधी आबादी (स्त्री) के साथ ठीक इसका उल्टा हुआ है। शरीर तो उनका है, परंतु उस शरीर पर किसी और का अधिकार होता है। वह अपने अनुसार अपनी जिंदगी नहीं जी सकती ,वह वही जिंदगी जीती है जो पहले से ही पुरूष समाज द्वारा निर्धारित होता है। उन्हें दूसरे के शर्तो पर जीवन यापन करना पडता है। यहाँ तक स्वयं का शरीर होकर उन्हें दूसरा व्यक्ति अपना समझकर उपभोग करता है इस संदर्भ में हिन्दी साहित्य जगत की सुप्रसिध्द लेखिका शरद सिंह कहती है– ''प्रत्येक प्राणी अपने देह का स्वयं स्वामी होता है। दुर्भग्यवश स्त्री के साथ विपरीत हुआ।''[७]प्रत्येक जीव अपने शरीर का स्वयं स्वामी होता है पर नारी क्यों नही। यह प्रश्न विचारणीय है। कब तक नारी को एक वस्तु की तरह भोग का साधन मात्र समझा जाएगी?क्या इससे उपर नारी का कोई स्थान नहीं। इससे उपर भी नारी का स्थान है। समाज में कई ऐसे बुध्दजीवी वर्ग हैं जिन्होनें समाज के सामने नारी के उदात्त स्वरूव का चित्रण किया है। हिन्दी साहित्य जगत को ही ले लिजिए जहाँ एक ओर उन्हें केवल सहचरी के रूप में देखा जाता है (रीतिकाल) वो वही, 'प्रसाद' जैसे प्रभावशाली व्यक्तित्व के साहित्यकार नारी को केवल 'नारी तुम केवल श्रध्दा हो' कहकर सम्बोधित करते है।

निष्कर्ष :–

'समता' और 'समानता' के इस दौर में नारी भी समता और समानता की अधिकारी है। और बात की पक्षधर साहित्यकार चित्रा मुदगल भी है जिन्होनें अपने साहित्य कृतियों के माध्यम से नारी के वास्तविक रूपों से लोगों को अवगत कराया है। वह क्या चाहती है, उसे भी उन्होनें सबके समक्ष अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है। अपनी रचनाओं के माध्यम से मुद्‌गल जी महिलाओं के साथ हो रहे अन्यायों का पुरजोर विरोध करती है। इनकी रचनाओं नारी प्रत्यके वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। चाहे वह शोषित नारी हो या स्वतंत्रता के लिए समाज और अपनों से विरोध करती हुई विद्रोही नारी। 'एक जमीन अपनी' उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने विज्ञापन दुनिया कें सच को उजागर किया है की किस प्रकार उस दुनिया में नारी का मानसिक शोषण के साथ–साथ दैहिक शोषण भी होता है वही 'आंवा' उपन्यास को तो इसी जीवन का महाकाव्य के रूप में देखा जाता है। जिसमें स्त्री जीवन के विविध पहलूओं का मार्मिक एवं हृश्दयस्पर्शी चित्रण किया गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

१. मुदगल, चित्रा. ''आंवा'' सामयिक: प्रकाशन दिल्ली (२०१५) पृ.क्र. १११
२. थोरात, गोरक्ष. 'चित्रा मुदगल के कथा साहित्य का अनुशीलन''अन्नपूर्णा प्रकाशन: कानपुर (२००९) पृ.क्र.१०९
३. मुदगल, चित्रा.''आंवा'' सामयिक प्रकाशन: दिल्ली (२०१५) पृ.क्र.३६१
४. मुदगल, चित्रा. ''एक जमीन अपनी'' सामयिक :प्रकाशन दिल्ली (२०१६)पृ.क्र.२४३
५. वही पृ. क्र.२३
६. थोरात, गोरक्ष. ''चित्रा मुदगल के कथा साहित्य का अनुशीलन'' अन्नपूर्णा प्रकाशन: कानपुर(२००९) पश. क्र.१९३ (साक्षात्कार चित्रा जी का)
७. सिंह शरद ''स्त्री विमर्श 'माई स्टोन पुरूष 'पंचशील शोध समीक्षा पृ. क्र. ३८